अध्याय 2

IFLCHB

कातिक और केकती का गाँव

मेरा नाम विजय सिंह बर्मन है। दो वर्ष पहले तक मैं भी एक गाँव पेंड्रीकला के माध्यमिक शाला में प्रधान अध्यापक रहा। अब शिक्षकीय सेवा पूर्णकर बिलासपुर में रहने लगा हूँ। बच्चों से मेरा गहरा लगाव रहा है। इसलिए आज भी अपने उन विद्यार्थियों से संबंध नहीं तोड़ पा रहा हूँ। कुछ बच्चे चिट्ठी में अपने स्कूल, अपने घर, अपनी पढ़ाई और अपने गाँव का वर्णन लिख भेजते हैं। इससे मुझे यहाँ बैठे–बैठे पेण्ड्रीकला की समस्त जानकारियाँ मिल जाती हैं। मुझे बच्चों के पत्र पढ़कर ऐसा लगता है कि जैसे मैं उन बच्चों के बीच पहुँच गया हूँ। आप भी उनमें से एक पत्र पर नज़र डालिए?

ग्राम – पेंड्रीकला
दिनांक : 2.10.07

J); x:no]

सादर प्रणाम, आशा है आप कुशल होंगे। जब से आप पेंड्रीकला छोड़कर गए हैं, हम सभी को आपकी बहुत याद आती है। आपको पेण्ड्री की प्यारी–सी हाफ नदी की याद तो आती ही होगी। सुबह–सुबह आपने जो नदी किनारे टहलने की आदत डाली थी वह अब भी जारी है। आज सोमू ने एक छोटा–सा केकड़ा पकड़ा, उसे चलता देख हमें उस दिन की याद आई जब आपने हमें बताया था कि इस छोटी–सी नदी में भी कई प्रकार के जीव–जंतु रहते हैं।

चित्र–2.1 बोरियों से बंधा हुआ बाँध

vkidk iHkkfor djus okyh fdlh ,d f'k{kd dk ckjs es fyf[k,A

चित्र–2.2 स्वरोजगार

IFV8IY

आप यह जानकर खुश होंगे, कि गाँव के सभी लोगों ने मिलजुलकर बोरियो में रेत भरकर नदी पर बाँध बना लिया है। बाँध के पानी का उपयोग नहाने और पशुओं को पिलाने के लिए होता है। कुछ लोग सब्जी–भाजी की खेती के लिए मोटर पंप लगाकर नदी में एकत्रित जल का उपयोग सिंचाई के रूप में करने लगे हैं। वे उसे आस पास के बाजारों में बेचने जाते हैं। इससे उनकी अच्छी आमदनी हो जाती है।

नदी पार पटेल की अमराई में इस साल खूब आम लगे हैं लेकिन पहले जैसे कच्चे आमों का मजा लेना मुश्किल हो गया है। कातिक, तीजन, चैतू, बैसाखू, केकती, देवकी, मनवा और समारू की माँ ने मिलकर महिला बचत समूह बना लिया है। इन्होंने इस वर्ष अमराई को ठेके पर लिया है और बारी–बारी से उसकी रखवाली करती हैं। उनकी मेहनत की कमाई का नुकसान हम कैसे कर सकते हैं। शाम को गिरे हुए कच्चे आम को वे खुद ही हमें उठाने से नहीं रोकती हैं।

हम देर तक अमराई में गिल्ली–डंडा और अन्य खेल खेलते हैं। आजकल कमल का चचेरा भाई भी गर्मी की छुट्टियों में यहाँ आया हुआ है। उसने पहली बार हमारे साथ गिल्ली–डंडा खेला। उसे बड़ा मजा आया।

प्रीति दीदी शहर से आम, बिही, आँवला, जाम के अचार, मुरब्बे व जैम बनाना सीखकर आई हैं। उन्होंने बचत समूह की महिलाओं को ये सब बनाना सिखा दिया है। सबने मिलकर आम और नींबू के आचार, आँवले का मुरब्बा, जैम, शरबत आदि बनाया है। सेमरसल के मेले (मड़ई) में उनके बनाए सभी सामान हाथोंहाथ बिक गए। यह आमदनी उन्होंने समूह के खाते में जमा कर दिया है।

प्रीति दीदी ने उन्हें मशीनों के लिए बैंक से ऋण दिलवा दिया है जिससे उनका महिला कुटीर उद्योग और बढ़ गया है।

dVhj m|kx d ckj e f'k{kd l ppk dhft,A

xfrfof/k

lwph cukb,&

Lo lgk;rk dsUnz	dk;Z
1.	
2.	

कुंडा के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के डॉक्टर,नर्स और कंपाउंडर हमारे विद्यालय में टीकाकरण के लिए आए थे । उन्होंने कुछ संक्रामक रोगों से बचाव के बारे मे बताया ।

1. अपने आसपास फैलनेवाले प्रमुख संक्रामक रोगों के बारे में लिखिए ?

2. संक्रामक रोगों से कैसे बचाव हो सकता है ?

केकती को नदी की रेत में घरौंदे बनाना और पेड़ों की झुरमुट में लुकाछिपी खेलना खूब अच्छा लगता है। कातिक अभी भी भैंस की पीठ पर बैठे–बैठे बाँसुरी की ऐसी तान छेड़ता है कि सभी सुनने वाले मुग्ध हो जाते हैं। छुट्टियों के दिनों में चाँदनी रात में नदी की रेत में विष–अमृत खेलना, जंगल में लासा (गोंद), चार व तेंदू खाने के लिए घंटों घूमना, तितलियों के पीछे दौड़ना हमें आज भी खूब अच्छा लगता है।

चित्र–2.3 बाँसुरी की तान छेड़ता कातिक

गुरु जी आपको यह जानकर खुशी होगी कि केकती और कातिक भी स्कूल जाने लगे हैं। दोनों पढ़ाई मे ध्यान दे रहे हैं। केकती बहुत सुंदर चित्र बना लेती है और कातिक विद्यालय के कार्यक्रमो में बाँसुरी की धुन सुनाकर सबका दिल जीत लेता है।

मंगल माझी आपको याद करते हुए नदी के घाट की सफाई पर ध्यान देता है। गाँव के लोग भी घरों का कचरा अपने खाद के गढ्ढे में ही फेंकते हैं और उसे खाद के रूप में प्रयोग करते हैं।

**1- unh ds ?kkV dh lQkbZ ls ykxksa dks D;k ykHk gksxk **

**2- dpjs dk x<<s esa Mkyuk D;ksa t:jh gS **

बाँस की सींकों से ग्लोब बनाने वाले रामू काका ने ग्रामीण बैंक से लोन लेकर दुकान खोल ली है। वे अपनी दुकान पर सूप, डलिया, टोकरी, झाड़ू आदि बेच रहे हैं।

चित्र–2.4 रामू काका की दुकान

fdUgha ikap ok|;=ksa ds uke fyf[k,A

xfrfof/k

,lh lkexh dk irk dhft, ftldk fuek.k vkid xkao e gkrk g vkj ftl cpk tkrk g

सुभाष को आप भूले नहीं होंगे। वह आज भी खो—खो और कबड्डी का सबसे अच्छा खिलाड़ी है। उसने इस वर्ष राज्य स्तर पर भाग लेकर कई इनाम जीते हैं। ढोलक बजाने के लिए आप जिस मोहन की तारीफ करते थे अब वह माँदर, ढोलक, नगाड़ा बजाने के लिए पूरे इलाके में मशहूर हो गया है।

अंत में हम सभी छात्रगण आपको अपने विद्यालय के वार्षिक उत्सव के लिए आमंत्रित करते हैं और निवेदन करते हैं, कि आप हमे और नई जानकारियाँ देवें तथा बिलासपुर शहर के बारे में ढेर सारी बातें बताएँ।

आपके
सोमेश, मनीषा
और आपके सभी नटखट छात्रगण

अभ्यास के प्रश्न

IS9GZI

(अ) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. हाफ नदी के पानी का उपयोग.................................. की खेती के लिए करते हैं ।
2. प्रीति दीदी शहर से.. बनाना सीखकर आई हैं।
3. बचत समूह की महिलाएँ ....के मेले में आँवले का मुरब्बा, आम.......................नींबू का आचार आदि हाथोंहाथ बेच लेती थी।

(ब) सही जोड़ी बनाइए—

1. सुभाष	घरौंदे बनाता है।
2. मोहन	भैंसे की पीठ पर बैठकर बाँसुरी बजाता है।
3. कातिक	माँदर, ढ़ोलक बजाता है।
4. केकती	खो—खो, कबड्डी का खिलाड़ी है ।

(स) प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. सुबह नदी के तट पर बच्चों ने क्या देखा ?
2. पेंड्रीकला के लोगो ने रेत की बोरियों से नदी को क्यों बाँधा था ?
3. प्रीति दीदी ने बचत समूह की क्या सहायता की ?
4. बचत समूह की महिलाएँ गाँव में क्या—क्या बनाती हैं ?
5. महिलाओं को मशीन की सहायता से क्या लाभ हुआ ?
6. रामू काका ने किसकी सहायता से दुकान खोली ?
7. स्वसहायता समूह से क्या आशय है ?